International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-05-2021, Accepted: 04-05-2021, Published: 19-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 107-110

सूचना और प्रौद्योगिकी युग में हिंदी भाषा का वैश्विक स्वरूप

डॉ मंजु पुरी
सहायक आचार्य, हिंदी, इक्डोल, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसे अपने भावों व विचारों के विनमय के लिए विभिन्न संकेतो और ध्वनियों के रूप में भाषा की आवश्यकता होती है स इस सन्दर्भ में मानव की आवश्यकता के अनुरूप हिंदी भाषा की बात करें तो हिंदी भारतीय सभ्यता की वाहिका और संस्कृति की रक्षक है स हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश में ज्यादातर लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है स इस संदर्भ में महात्मा गांधी का मानना था कि हिंदी के बिना राष्ट्र गूंगा है क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है स सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी भाषा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत कर रही है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपने कदमों को मजबूती से आगे बढ़ा रही है स विश्व बाजार के दबाव के कारण व विज्ञान की सूचना से जुडी अनेक जानकारियां हिंदी में पहुँचाने के लिए बड़ी बड़ी कंपनियों को विवश होना पड़ रहा है स ईमेल, ई –कॉमर्स, ई –बुक वेबपोर्टल ने हिंदी को विश्वव्यापी बना दिया है स संसार की बेहतरीन बहुराष्ट्रीय कंपनियां जैसे माइक्रोसॉफ्ट गूगल, याहू, आईबीएम, ओरेकल ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के सपनों को पंख लगा दिए हैं स बदलते राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक वैज्ञानिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय परिवेश के कारण राज भाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार, प्रयोग और उसकी प्रतिष्ठा के लिए सतत प्रयास किये जा रहे हैं स अब राजभाषा हिंदी के उज्जवल भविष्य के प्रति चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है स क्योंकि हिंदी विश्व की अन्य भाषाओं से प्रतिस्पर्धा करने के लिए कटिबद्ध है, वह दिन अब दूर नहीं जब हिंदी विश्व की अन्य भाषाओं की तरह संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा हासिल कर लेगी।

मूलशब्दः प्रौद्योगिकी, तकनीकी, मानकीकरण, अभियांत्रिकी, वैश्विक, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट

प्रस्तावना

भाषा लोक व्यवहार का सशक्त माध्यम है। ऐसा माध्यम जो हमें एक दूसरे को भलीभांति जानने, पहचानने और समझने का अवसर देता है स इसलिए भाषा को बहता नीर कहा गया है स किसी भी देश की उन्नति में वहां की राष्ट्रभाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है स यदि नागरिकों के शिक्षा प्राप्ति का माध्यम राष्ट्रभाषा रहे तो वह राष्ट्र निश्चित रूप से प्रगति करता है। "हिंदी मात्र एक भाषाई प्रभाव नहीं है। यह तो अनेक स्रोतों, जल धाराओं के योग से बनी गंगा की धारा है,जनमानस के हिमालय की चोटियों से सिमट – सिमट कर बह रही जन –जन की जलधारा है"[1] लेकिन बहुभाषिक देश होने के कारण हमारे देश में भाषा की समस्या, भावुकता जनपादिक मोह और पूर्वाग्रहों के कारण काफी उलझ गई है स हिंदी भाषा के सामर्थ्य और हिंदी भाषाओं की संख्या दोनों के ही आधार पर हिंदी ना केवल संपर्क भाषा या राष्ट्रभाषा तक अपना प्रभुत्व नहीं रखती बल्कि हिंदी राष्ट्रसंघ की भाषा बनने योग्य है स भाषा संबंधी दृष्टिकोण में स्पष्टता ना होने के कारण भाषा संबंधी अनेक आपत्तियां उठती रहती हैं। संविधान में स्वीकृत सभी भारतीय भाषाएं समान महत्व रखती है। सांस्कृतिक संवहन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, पारंपरिक प्रदेशों के परिरक्षण की दृष्टि से संविधान स्वीकृत सभी भारतीय भाषा महत्वपूर्ण है और उनके निरंतर गतिशील रहने की आवश्यकता है। प्रख्यात रूसी विद्वान मिखाईल का कहना था कि भाषा ही समाज है। इसलिए मानव समाज का मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा भौगोलिक परिवर्तन भाषा के स्वरूप को भी एक नया मोड़ देता है स निसंदेह हिंदी भारत वर्ष के सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में बोले जाने वाली भाषा है स देश के संपूर्ण क्षेत्रफल के 60þ भूभाग में बोली जाती है और कुल आबादी के 40þ देशवासी हिंदी बोलते हैं इन आंकड़ों से हिंदी के वैभव का अंदाजा सरलता से लगाया जा सकता है लेकिन इतने आंकड़ों के बावजूद भी हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह स्थान कायम नहीं कर पाई जिसकी वह अधिकारिणी है। राष्ट्र संघ में स्वीकृत पांच भाषाओं अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी और चीनी के बाद अरबी और उसके बाद जर्मन अपना स्थान बनाने में प्रयत्नशील है, यहाँ हमें हिंदी भाषा नदारद मालूम होती है स प्रभुत संख्या होने के बावजूद भी हिंदी भाषा को अपने ही देश में, न ही विश्व मंच पर उचित स्थान मिल सका है सयद्यपि दुनिया के 38 देशों में हिंदी की अच्छी पहुँच है और विदेशों में भी लगभग 94 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है। इन सब के बावजूद भी हिंदी भाषा का विश्व में क्या स्थान है ?विशाल प्रभुत्व, वैज्ञानिकता, सरलता होने के बावजूद भी क्या कारण है कि हिंदी राष्ट्र संघ की छठी भाषा होने का दर्जा नहीं ले सकी ?

निसंदेह भाषा की प्रतिष्ठा उसके रचनात्मक साहित्य और उसके सांस्कृतिक महत्व पर पर तो निर्भर करता ही है साथ ही साथ भाषा और भी आगे बढ़ सकती है यदि वह तकनीकी उपकरणों का सहारा ले स सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषण करता हैस "आधुनिक युग में भाषा के सामाजिक स्वरूप को और अधिक समृद्ध और व्यापक बनाने में आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सर्वाधिक और उल्लेखनीय योगदान है"[2] क्योंकि वर्तमान समय में कोई भी राष्ट्र अपनी मातृभाषा को पूर्णता सार्वभौमिक बनाए बिना उन्नति नहीं कर सकता इसलिए तकनीकी को जन उपयोगी बनाना है तो उसे आम जन की भाषा में विकसित करना जरूरी है क्योंकि कोई भी भाषा सामाजिक व्यवहार क्षेत्रों में कितना प्रयोग में आती है,उच्च ज्ञान विज्ञान के संदर्भ में कितना प्रयोग में आ रही है, इन सब गतिविधियों से ही भाषा की विस्तार और उसके अंतर्निहित क्षमता का ज्ञान होता है। हिंदी को जन–जन की भाषा बनाने के लिए उसके सरलीकरण की आवश्यकता है, तमाम जटिलताओं को दूर करके उसे सरल

और सुबोध बनाना जरूरी है। इसके लिए जरूरत पड़ने पर विदेशी शब्दों को भी हिंदी क्षेत्र में समाविष्ट कर लिया जाना चाहिए । डॉ राम मनोहर लोहिया ने हिंदी के सरलीकरण के लिए अनेक सुंदर और उपयोगी सुझाव दिए हैं "विदेशी शब्दों का हिंदी में प्रयोग देखकर नाक भौह सिकोड़ने की आवश्यकता नहीं है स जो बहु प्रचलित विदेशी शब्द है उनका प्रयोग हिंदी में धड़ल्ले से किया जाना चाहिए स जैसे स्टेशन, सिगरेट, वगैरह स उनके स्थान पर नए शब्दों की तलाश यथा लोहपथगामिनी विश्राम स्थल या धुम दंडिका आदि का प्रयोग अनावश्यक ही नहीं,हास्यास्पद भी है। "[3] वर्तमान समय में सरकारी कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए सूचनाओं का माध्यम जन भाषा होना जरूरी है उदाहरण के लिए हम जापान, चीन, दक्षिण कोरिया को ले सकते हैं इन विकसित देशों में तकनीक का प्रयोग उनकी अपनी मातृभाषा में होता है यहां तक कि आम समाचारों की जानकारी, शेयर बाजार की गतिविधियों की जानकारी भी उनकी मातृभाषा में ही मिलती है ना कि हमारे देश की तरह अंग्रेजी में जिसे समझना आमजन की पहुंच से भी बाहर है, अंग्रेजी सत्ता की गुलामी झेलने के कारण हम हिंदी की बजाय अंग्रेजी के अधीन रहना ज्यादा पसंद करते हैं यह हमारी गुलाम मानसिकता बन गई है निःसंदेह अगर हम भाषा को तकनीक से जोड़ेंगे तो निसंदेह यह राष्ट्रसंघ की भाषा बन सकती हैं प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी को समग्र भारत वर्ष के अर्थतंत्र, वाणिज्य, व्यवसाय, लेन–देन और दैनिक कार्यों से जुड़ना होगा स क्योंकि हिंदी जितना अधिक तकनीकी से जुड़ेगी उतना अधिक सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ेगी स आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है और सूचना प्रौद्योगिकी का मूल कंप्यूटर है स कंप्यूटर के बिना सूचना प्रौद्योगिकी के किसी भी रूप की कल्पना आज के समय में अधूरी है क्योंकि यह युग सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है स आज समूचे विश्व में सूचनाओं का संकलन और उनका आदान–प्रदान अत्यंत सरल हो गया है परंतु हमारे देश भारत के अधिकांश भागों में हिंदी बोली व पढ़ी तथा समझी जाती है स वहां कंप्यूटर पर अंग्रेजी भाषा की वजह से उसका सदुपयोग एक अड़चन है क्योंकि कंप्यूटर के प्रयोग से दिक्कत अंग्रेजी भाषा की वजह से आती है ना कि तकनीकी वजह से परंतु आज भी अधिकांश कंप्यूटर की तकनीक और उसके सॉफ्टवेयर अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है जो कि राष्ट्र की समग्र उन्नति में बाधक है स स्पष्ट है कि कोई भी राष्ट्र अपनी मातृभाषा को पूर्णता सार्वभौमिक बनाए बिना उन्नति नहीं कर सकता स हिंदी वह भाषा है जिसकी गूंज हमारी धड़कनों में सुनाई देती है इसलिए ही हिंदी को भारत माता के माथे की बिंदी कहा जाता है स निसंदेह यह भी सत्य है कि जिस भाषा पर जितना भारी दबाव होगा वह उतना ही तीव्रता से अपने विकास के लिए प्रयतनशील रहेगी ठीक उसी प्रकार वर्तमान संदर्भ में हम हिंदी की स्थिति को ले सकते हैं। तकनीकी युग में हिंदी भाषा को आधुनिकीकरण और मानकीकरण दोनों प्रक्रियाओं से गुजरना होगा क्योंकि हिंदी भाषा जितना अधिक तकनीकी शब्दावली, व्याकरण, प्रशिक्षण सामग्री, ज्ञान साहित्य, संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध करवाती है उतना ही अधिक उसके प्रयोग की संभावना भी बढ़ जाएगी स राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के ऊर्ध्वगामी विकास और जीवन स्तर को सुधारने के लिए तथा राष्ट्रीय विकास के लिए मानव संसाधन विकास में तकनीकी शिक्षा की भूमिका को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने अपने क्रमिक पंचवर्षीय कार्यक्रमों में तकनीकी शिक्षा के विकास पर बल दिया है स विज्ञान और कला का यदि सही मिश्रण किया जाए तो तकनीकी लेखन में अपार संभावनाएं हैं । 4ळ, 5ळ तकनीक से हम अछूते नहीं रह सकते क्योंकि आज के वैश्वीकरण युग में चाहे शिक्षा हो, सरकारी नीतियां हो, टेलीकॉम सेक्टर हो, चारों और इसका प्रभाव है। इसलिए ही रिजर्व बैंक, नेशनल इंस्टीट्यूट आफ बैंक मैनेजमेंट इंडियन ओवरसीज बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा इत्यादि ने अपने अधिकारियों को हिंदी में प्रशिक्षण करवाने का कदम उठाया है ताकि आम जनता को तकनीक के माध्यम से जोड़ा जाए स जो भाषा हमारी दिलों की धड़कन है अगर वही तकनीक आम जनता को उनकी भाषा में मिलेगी तो देश में भाषा,व देश दोनों का स्तर ऊपर उठेगा निसंदेह कबीर, प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा इत्यादि अनेक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं जिनकी रचनाएं सांस्कृतिक समृद्धि के कालजयी प्रतीक है स परंतु वर्तमान संदर्भ में इन साहित्यकारों का सहारा लेकर हम आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि यद्यपि यह हमारे लिए प्रेरक हैं, श्रद्धेय हैंस हम उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करते हैं स विश्व स्तर पर हिंदी के विस्तार में हिंदी साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका है और समय के साथ इनके तरीके में बदलाव आते जा रहे हैं स हिंदी साहित्य तकनीकी से भी जुड़ रहा है तथा कंप्यूटर की विभिन्न विधाओं में हिंदी अपनी उपस्थिति को दर्ज करा कर आगे बढ़ रही है स हिंदी गद्य विधा में अभिव्यक्ति, गर्भनाल जैसी वेब पत्रिकाएं तथा काव्य में अनुभूति आदि जैसी व्यापम पत्रिकाएं हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है स ऐसी कई पत्रिकाओं को विदेशों से एक बड़ा पाठक वर्ग मिला है स भूमंडलीकरण के युग में सूचना और प्रौद्योगिकी के तालमेल के बिना हिंदी के विस्तार की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अपनी तमाम कठिनाइयों के बावजूद भी हिंदी ने जिस तरह बाजारवाद की दुनिया में अपना पैर जमाया है उसकी मुक्त कंठ से जितनी भी प्रशंसा ज्यादा की जाए उतनी ही कम है स हिंदी और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए विभिन्न देशों में बसे भारतीय और हिंदी प्रेमी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें हैं स तकनीक की सहायता से प्रत्येक व्यकित और उसकी महत्ता इसलिए महत्वपूर्ण हो गयी है क्योंकि इंटरनेट पर उसका आईडी कंप्यूटर से जुड़े रहने से इंटरनेट की दुनिया में हिंदी का फैलते साम्राज्य की नवीनतम जानकारियां मिलती रहती है स प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख का मानना है कि अगले 5 से 10 सालों में हिंदी इंटरनेट पर छा जाएगी और अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी इंटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी लेकिन वर्तमान में प्रत्येक भाषा को समर्थ भाषा बनाने के लिए उसे यातायात, व्यापार, सैनिक शिविर, प्रायोगिक प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान इत्यादि सभी क्षेत्रों में अपना स्थान बनाना होगा यदि हिंदी भाषा की विज्ञान के क्षेत्र में स्थिति देखें तो विज्ञान ऐसा क्षेत्र है जहां हिंदी माध्यम की कल्पना भी नहीं की जा सकती लेकिन 10वा विश्व हिंदी सम्मेलन तकनीकी युग में हिंदी भाषा का स्थान निर्धारित करता है स पहली बार हिंदी सम्मेलन में विज्ञान क्षेत्र में हिंदी सत्र का आयोजन किया गया स इस सत्र के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी विषयों में पाठ्यक्रम सामग्री का हिंदी में विकास एवं हिंदी में विज्ञान लोकप्रिय करण एवं विज्ञान संचार को प्रोत्साहित करना था स विज्ञान क्षेत्र में मौलिक विज्ञान लेखन को प्रसारित किया जा रहा है ताकि विज्ञान के छात्र अपनी हिंदी भाषा की ओर आकर्षित हो स विज्ञान क्षेत्र में हिंदी का स्थान सशक्त बनाने के लिए दैनिक विज्ञान समाचार पत्र का प्रकाशन, विज्ञान एवं तकनीकी प्रयोगशालाओं द्वारा सोशल मीडिया पर हिंदी में विज्ञान सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए स "वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)के प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय द्वारा इस सिलसिले में वर्ष 1966 से 1980 तक के 15 वर्षों के प्रकाशनों की जानकारी हेतु किए गए एक सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि देश के कुल 3344 वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकों का प्रकाशन हिंदी में हुआ है जिसमें से अधिकतर मौलिक पुस्तके है तथा विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में कुल 321 पत्रिका हिंदी में प्रकाशित हो रही है "[4] हिंदी भाषा में विज्ञान विषयों पर वैज्ञानिक संस्थाओं द्वारा शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन अनिवार्य किया जाए । हिंदी में लेखन करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के

लोकप्रिय अन्य प्रचलित अंतरराष्ट्रीय शब्दों के यथारूप देवनागरी लिपि में मानव शब्दों के साथ यह जाने की स्वीकार्यता मिले इंस इन सब प्रयासों से हिंदी विज्ञान के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने में प्रयासरत हैं। हिंदी भाषा का व्याकरण एवं इसकी लिपि का अपना वैज्ञानिक आधार है इसलिए देवनागरी लिपि कंप्यूटर तंत्र की प्रक्रिया के लिए पूर्ण रूप से अनुकूल हैस देवनागरी लिपि को कंप्यूटेशनल भाषा में बदलने की अपार संभावनाएं हैं तथा इसके माध्यम से विलुप्त होती अन्य भारतीय भाषाओं का भी संरक्षण संभव है स इस लिपि में विश्व की किसी भी भाषा का अनुवाद आसानी से किया जा सकता हैस देवनागरी में पर्याप्त वर्णो की उपलब्धता है जो कि रोमन वर्णो की संख्या से दुगनी है स देवनागरी में प्राप्त वर्णो की उपलब्धता ही से श्रेष्ठ लिपि बनती है उदाहरण के लिए रोमन में हम हिंदी के वर्ण 'ट ' एवं 'त ' के लिए ज वर्ण, थ एवं ठ' के लिए जी वर्णो का प्रयोग करते हैं तो इस स्थिति में हम रोमन वर्ण 'ज' से देवनागरी लिपि की सही ध्वनि 'ट ' है या की 'त 'है, आदि में भ्रम की स्थिति में रहते हैं परंतु इस प्रकार के भ्रम की कोई भी गुंजाइश देवनागरी लिपि के प्रयोग में नहीं है इसलिए देवनागरी लिपि अन्य सभी लिपियों से अधिक वैज्ञानिक एवं श्रेष्ठ है स यह विश्व लिपि के रूप में स्थापित होने की अपनी क्षमता रखती हैस इन्हीं खूबियों के कारण कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में सॉफ्टवेयर का विकास कार्य अधिक होने लगा है और विभिन्न विषयों की जानकारी वेबसाइट पर हिंदी भाषा में देवनागरी लिपि में प्राप्त होने लगी है स भाषा और शब्दों की जटिलता में न अटकते हुए अलग–अलग पारिभाषिक शब्दों को हिंदी में यथोचित प्रचलित करना चाहिए स यदि विज्ञान के विद्यार्थी अपने शोध पत्र, शोध प्रबंध हिंदी में छपवाते हैं तो ये हिंदी के क्षेत्र में बड़ी कामयाबी होगी स विश्व में जो भी देश अपनी मातृभाषा में संचार और प्रचार कर रहे हैं, वह अपने देश की प्रगति में अपना योगदान भी दे रहे हैं स प्राणी कार्यकी एवं जैव रसायन, प्रतिरक्षा विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी इत्यादि पुस्तके दर्शाती है कि विज्ञान के क्षेत्र में तकनीकी के प्रयोग से हिंदी भाषा प्रयासरत है स इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग की पुस्तकें बेसिक इलेक्ट्रॉनिक प्रबंधन, इलेक्ट्रिकल सर्किट थ्योरी, पावर सिस्टम इत्यादि स अर्थशास्त्र में सांख्यिकी३३.. अर्थशास्त्र इत्यादि, पॉलिटेक्निक के छात्रों के लिए इलेक्ट्रिकल मैनेजमेंट, माइक्रोप्रोसेसर, सी प्रोग्राम इत्यादि हिंदी माध्यम की पुस्तके है जो सभी क्षेत्रों में मिल रही है जो निसंदेह हिंदी भाषा के स्थान को स्पष्ट कर रही है स हिंदी भाषा को विकास की ओर अग्रसर करने में तकनीक का बहुमूल्य योगदान है, यदि तकनीक है तभी सी –डैक की सहायता से चारों वेदों एवं अन्य पुराने ग्रंथों को व्यास नामक वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया है स लीला वेबसाइट की सहायता से भारतीय भाषाओं की पढ़ाई ऑनलाइन मुफ्त प्रदान की जाती है स लीप ऑफिस सॉफ्टवेयर में अंग्रेजी हिंदी शब्द कोष, अनुवाद, समानार्थी शब्दकोश, हिंदी में ई–मेल आदि अंग्रेजी भाषा के समकक्ष सभी सुविधाओं को प्रस्तुत करता है स वास्तव में हिंदी को कंप्यूटर के लिए उपयोगी बनाने में सबसे अधिक सहायता हमारी देवनागरी लिपि और वर्णमाला के ध्वन्यात्मक स्वरूप ने की है स अक्षरा,आलेख, शब्दावली, मल्टीवर्ड, संगम, देव नेस, नारद, चाणक्य, सुलिपि भाषा आदि हिंदी सॉफ्टवेयर की सहायता से तकनीकी युग में हिंदी अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है, 'अनुसारक' तकनीकी जो अनुवाद के क्षेत्र में मशीनी अनुवाद हेतु कार्य कर रही है स आईबीएम टाटा कंपनी ने आरव केव कंप्यूटर की सहायता से 'हिंदी डोस' नाम से भी एक विशेष तकनीक बनाई है स जिस की विशेषता यह है कि इसमें मैन्यु व कमांड दोनों हिंदी में है स मोटोरोला ने हिंदी में पेजर का विकास किया है इन सब के अतिरिक्त एक ऐसा क्षेत्र जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को उसकी पहचान दिला रहा है जी हां खेल जगत ऐसा चित्र जिसमे अंग्रेजी का फोन वर्चस्व था लेकिन अब हिंदी कमेंट्री के कारण धीरे–धीरे अपना साथ बनाती जा रही है। हिंदी आज इतनी समर्थ हो गई है कि इसके माध्यम से आंखों देखा हाल सुनाया जाता है स हिंदी के ही शब्द जैसे बल्ला, गेंद, बल्लेबाजी का प्रयोग होता है स सर्व समावेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा संस्कृत से लेकर सभी प्रांतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपने अंदर समाहित करने की क्षमता रखती है । " इंटरनेट ने अनुवाद के क्षेत्र में नई क्रांति लाई है स भूमंडलीकरण के युग में साहित्य शब्द का प्रयोग भी बहुत व्यापक अर्थ में करना अनिवार्य हो गया है स आज समस्त ज्ञान राशि के संचय को ही साहित्य कहा जा रहा है"[5] तकनीकी युग में हिंदी में अपने परंपरागत स्वरूप को समय के अनुसार ढाल रही है। हिंदी भाषा प्रौद्योगिकी के रथ पर सवार होकर विश्वव्यापी बन रही है स ई –कॉमर्स, ई– बुक, इंटरनेट,वेब जगत में सहजता से हिंदी गतिशील है स यूनिकोड जिसमें सभी संकेतों को एकीकृत करने की व्यवस्था होती है स यह व्यवस्था सभी भाषाओं को समान महत्व देती है और अंग्रेजी के वैश्विक परिदृश्य को समाप्त कर रही है स प्रसिद्ध कवि चक्रधर जी की निम्नलिखित पंक्तियां हिंदी और यूनिकोड के स्वरूप को प्रकट करती हैं।

सबको प्यारी अपनी भाषा
कंप्यूटर से जगी आशा
मां हिंदी की मिली गोद है
यूनिकोड का महामोद है

हिंदी की सहजता व वैज्ञानिकता के कारण ही माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी वैश्विक कंपनियां विस्तृत बाजार और लाभ को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहीं है ।

यह सत्य है कि हिंदी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लगातार प्रयासरत है [६] इसके बावजूद भी हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में अभी भी काफी चुनौतियां मौजूद है जैसे हिंदी में वे सारी सुविधाएं होनी चाहिए जो अंग्रेजी और रोमन लिपि के पास है स डायनामिक हिंदी फौंट्स के अभाव में कई बार साइट पर पढ़ना असुविधाजनक होता है स हिंदी के फोंट में एकरूपता के अथक प्रयासों से यूनिकोड की उपलब्धि ने हिंदी फोंट को एकरूपता देने का प्रयास किया है स यूनिकोड फोंट के विकास से फोर्ट की समस्या बहुत हद तक दूर हुई है स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर कार्यक्रम के अंतर्गत यूनिकोड प्रत्येक वर्ण के लिए एक विशेष बूथ संख्या प्रदान करता है चाहे कोई भी प्लेटफार्म हो चाहे कोई भी प्रोग्राम हो चाहे कोई भी भाषा हो यूनिकोड फोंट की मदद से हम आसानी से सॉफ्टवेयर के उपकरणों का इंटरफेस कमांड निर्देशन के संदेश पाठ आदि अभिनीत भाषा हिंदी में विकसित कर सकते हैं इसी वजह से आज विश्व स्तर के अनेक सॉफ्टवेयर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में विकसित होने लगे हैं जिसे वर्तमान में मोबाइल, टीवी, टेबलेट आदि का उपयोग हिंदी भाषा में होने लगा है और आज करोड़ों उपयोगकर्ता सिर्फ इसलिए बढ़े हैं क्योंकि इन उपकरणों के सॉफ्टवेयर हिंदी भाषा में बनने लगे हैं इससे हिंदी भाषा को विस्तार मिला है और कंप्यूटर पर हिंदी स्थापित होने से हिंदी के लोगों की संख्या बढ़ी है जिससे विश्व के अनेक हिस्सों से हिंदी के लोगों का आदान–प्रदान होने लगा है और विश्व में एक नया हिंदी भाषी समुदाय बनने लगा है इसके साथ साथ ही सोशल मीडिया पर भी हिंदी का जादू छाने लगा है कंप्यूटर के हिंदीकरण होने से संसार की अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों के विज्ञापन हिंदी भाषा में जारी करने लगी है और विश्व के अनेक व्यवसाई व्यक्तियों को हिंदी भाषी जानने और सीखने की आवश्यकता पड़ने

लगी है हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इससे विदेशियों में भी हिंदी सीखने की रुचि बढ़ी हैकिंतु अभी भी मंजिल काफी दूर है तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का स्थान सशक्त बनाने के लिए कमियों को समय रहते दूर करना चाहिए ताकि विकास के क्षेत्र में रुकावट ना हो सूचना प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश में हिंदी भाषा धीरे–धीरे अपना स्थान प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है स हिंदी की उपादेयता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लग सकता क्योंकि धीरे ही सही पर हिंदी अपने स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ रही है यदि हम अंग्रेजी की चकाचौंध से बाहर ना निकले और चीन, जापान, रूस, जर्मन, दक्षिण कोरिया जैसे देशों की भांति अपनी मातृभाषा संपर्क भाषा लोक भाषा को विकसित नहीं कर पाए तो यह है हमारे लिए बेहद शर्मनाक स्थिति होगी स इसलिए हमें यह प्रण लेना चाहिए कि चाहे तकनीकी सहायता से ही सही हमें हिंदी भाषा के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पूरे मनोयोग से आगे आना चाहिए स फिर भी यह आवश्यक है कि हम हिंदी एवं उस पर आधारित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी उत्पादन के लिए अभियान चलाएं तकनीकी क्षेत्र बड़ा विशाल है इसकी किसी भी एक शाखा से जुड़कर इस विशाल वटवृक्ष को मापा जा सकता है आज सूक्ष्मतम जानकारी से लेकर विशाल जानकारी इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर उपलब्ध है जिसका उपयोग कर सभी इसका लाभ उठाने के लिए लालायित है पर इसकी सबसे बड़ी बाधा है भाषा की समझ स आज इंटरनेट की लगभग 80þ सामग्री अंग्रेजी में ही उपलब्ध है स हमारे देश में हजारों लाखों नागरिक है जो कि सफल व्यापारी, दुकानदार, किसान, कारीगर शिक्षक आदि हैं ये सभी अपने क्षेत्र में कुशल विद्वान है लेकिन यह जरूरी नहीं कि है सब अंग्रेजी भाषा के जानकार भी हो स ग्रामीण परिवेश में रहने वाले कृषक कारीगर जो प्रत्येक देश की उन्नति का मूल आधार हैं यदि अच्छी तकनीकी जानकारी अपनी भाषा हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में मिले तो सोने पर सुहागा होगा अतः हमें हिंदी के और अधिक प्रचार प्रसार एवं विस्तार के लिए ज्यादा से ज्यादा हिंदी सामग्री को इंटरनेट पर स्थापित करने हेतु कार्य करने की जरूरत है ताकि इंटरनेट पर हिंदी सामग्री का प्रतिशत और बढ़ सके तथा तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी एक समृद्ध विशाल वटवृक्ष के रूप में परिवर्तित होते हुए विशाल पटल पर पूर्ण रूप से स्थापित हो सके स सुधीश पचौरी के शब्दों में

"हिंदी मनोरंजन सूचना और उपभोग का जबरदस्त माध्यम बनी है और उसके बाजार में ऐसा गुरुत्वाकर्षण केंद्र अपने आसपास बनाया है कि बड़ी से बड़ी बहुराष्ट्रीय उपभोक्ता कंपनी ब्रांड कैंपेन के लिए हिंदी बाजार में आने के लिए हिंदी को ही अपनाती है हिंदी की ताकत यह भी रही है कि उसे साहित्यकारों पत्रकारों के अलावा और उनसे ज्यादा हिंदी फिल्मी गानों ने विज्ञापनों ने और बाजार में बदला है" [6]

हिंदी के प्रति एक आरोप हमेशा लगाया जाता है कि यह केवल भावनाओं और संवेदनाओं की भाषा है तथा विचारों की भाषा बनने में असफल रही है इस आरोप को निराधार साबित करने का दायित्व हम सबका है स आज संगोष्ठी परिसंवाद आदि का आयोजन एक दायरे में सिमट कर रह गया है राजभाषा के रूप में हिंदी की क्षमताओं को देखकर एक सुखद आश्चर्य का होना आवश्यक है किंतु वैचारिक हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयासों की वस्तुतः कमी है स वैचारिक हिंदी के विभिन्न रूपों के विकास, प्रचार –प्रसार के लिए किसी भी स्तर की कोई कमी नहीं है, कमी है तो प्रतिबद्धता की स यदि सही मायनों में कहा जाये तो हिंदी से जुड़े अधिकांश लोग ही हिंदी की प्रगति में बाधक है क्योंकि उनको हिंदी बोलने में शर्म महसूस होती हैं, किसी बड़े मंच पर हिंदी की बजाय अंग्रेजी में बोल कर उनको ज्यादा गर्व महसूस होता है स विश्व पटल पर हिंदी की सबसे बड़ी चुनौती वेबसाइट के प्रयोग को लेकर है यद्यपि हिंदी अपनी क्षमताओं सहित अनवरत प्रगति दर्शा रही है तथापि व्यवसाय के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता उतनी नहीं है, जितनी होनी चाहिए स जब तक राष्ट्रीय स्तर पर व्यवसाय में हिंदी का उपयोग नहीं किया जाता तब तक यह स्थिति हिंदी के वैश्विक विकास के लिए बाधक है तथा इस दिशा में विशेष प्रयास की आवश्यकता है स आज हमारी भाषा निरंतर प्रगतिशील है तथा विकस के पथ पर अग्रसर है स हिंदी अकेले नहीं है बल्कि उसके साथ अन्य भारतीय भाषाएं भी है जो भारत की धड़कन हैं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं स हम सबके लिए भविष्य में और भी नई चुनौतियां हैं जिसके समाधान के लिए हमें मिलजुलकर हिंदी के वैश्विक स्वरूप को नया आयाम देना होगा स

संदर्भ सूची

1. महिपाल मिश्र, देवेंद्र मिश्र, विश्व बाजार में हिंदी, पृष्ठ 38
2. विनोद कुमार प्रसाद, भाषा और प्रौद्योगिकी, पृष्ठ 15
3. डॉ गोपी कृष्ण राठी ' मधुकर' (संपादक) राष्ट्रभाषा हिंदी
4. विनोद कुमार प्रसाद, भाषा और प्रौद्योगिकी पृष्ठ 279
5. डॉ माधव सोनटके, प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्ति और अनुवाद, पृष्ठ 165
6. डॉ कामराज सिंधु (संपादक) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की भूमिका, पृष्ठ 34